29-09-2020

संस्कृतसामान्यम् । उपशास्त्री II

अनिवार्य प्रथमपत्रम् ।

धातु रूपाणि

√जन् - आत्मनेपद रूपम् ।

√जन् (जन्म लेना), उत्पन्न होना, अभिव्यक्त करना आदि

लट् लकारः (वर्तमान कालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पु० -	जायते	जायेते	जायन्ते
मध्यम पु० -	जायसे	जायेथे	जायध्वे
उत्तम पु० -	जाये	जायावहे	जायामहे

लोट् लकारः

प्र० पु० -	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
म० पु० -	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
उ० पु० -	जायै	जायावहै	जायामहै

लङ् लकारः

प्र० पु० -	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
म० पु० -	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उ० पु० -	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

विधिलिङ्गम्

प्र० पु० -	जायेत्	जायेयाताम्	जायेरन्
म० पु० -	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
उ० पु० -	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

लृट् लकारः

प्र० पु० -	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
म० पु० -	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
उ० पु० -	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे

29.09.2020

डॉ० निर्मल कुमार झा, (स० प्राचार्य
रा० उ० सं० महावि० सुरखसेना, पूर्णि

संस्कृत सामान्यम् । उपशास्त्री I 29-07-2020

अनिवार्य प्रथमपत्रम् ।

प्रश्नपत्रस्वरूपम् ।

1. अतिलघूत्तरीयप्रश्नानि →

a. अत्यादि: में किन-किन वर्णों की संधि हुई है ?

b. राम + अयनम् , संधि करें ।

c. राजोवाच का संधिविच्छेद करें ।

d. ओ + अ = ?

e. अव्यय: का विग्रह करें ।

f. यथाशक्ति में कौन समास है ?

g. प्राचार्य: में कौन समास है ?

h. स्वरसन्धि के कितने भेद हैं ?

i. उप + ओषति = ?

j. गुण संधि का एक उदाहरण दें ।

k. येनाङ्गविकार: सूत्र का एक उदाहरण दें ।

l. हेत्वर्थे कौन सी विभक्ति होती है ?

m. अपवर्ग किसे कहते हैं ?

n. फलप्राप्ति होने पर कौन विभक्ति होती है ?

o. आचार्यात् पठति, में किस सूत्र का प्रयोग (कारकसूत्र) हुआ है ?

p. सति सप्तमी या भावे सप्तमी का एक उदाहरण लिखें ।

q. उत्तमर्ण (धारि धातु के अर्थ में) में किस विभक्ति का प्रयोग होता है ?

r. निर्धारण अर्थ में श्रेष्ठता बतलाने के लिए किस विभक्ति (कारक) का प्रयोग होता है ?

29-07-2020

डॉ० निर्मल कुमार झा (स० प्राचार्य)

रा० उ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ

29-09-2020

साहित्यम्। शास्त्री

छन्दविचारः।

वर्णार्धसमवृत्तम् → कुछ छन्द ऐसे भी हैं जिनके कोई दो चरण एक समान होते हैं। यह कई प्रकार से हो सकता है। यथा → पहला तथा तीसरा यानि विषम पाद का एक समान होना। दूसरा तथा चौथा यानि समपाद का एक समान होना। अथवा पहला, दूसरा पाद एक समान या तीसरा, चौथा पाद एक समान हो। आदि।

उपचित्रम्, द्रुतमध्या, वेगवती, केतुमती, आख्यानकी, अपरवक्त्रम्, पुष्पितताग्रा, सुन्दरी आदि छन्द वर्णार्धसम वृत्त (छन्द) के भेद हैं।

अपरवक्त्रम् → लक्षणम् →

"अयुजि ननरला गुरुः समे।
नजभरवक्त्रमिदं ततो जरौ॥"

जिस छन्द के विषमचरणों (पहला तथा तीसरा पाद) में क्रमशः दो नगण, एक रगण, लघु तथा गुरु हो। सम चरणों में (दूसरा तथा चौथा पाद में) एक नगण, दो जगण तथा एक रगण हो, तो वह 'अपरवक्त्र' छन्द होता है। इसे कुछ विद्वान् "वैतालीय" छन्द भी कहते हैं।

उदाहरणम् → "सकृदपि कृपणेन चक्षुषा, न-र-व-र पश्यति यस्य वाननम्।
न पुनरपरवक्त्रमीक्षते, स हि सुखितोऽर्थिचनस्तथाविधः॥"

29-09-2020

डॉ० निर्मल कुमार झा, (स० प्राचार्य),
रा० उ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ।